अर्थ है 'धतूरा'। इस प्रकार एक ही शब्द का भिन्न–भिन्न अर्थों में दो बार प्रयोग होने वेफ कारण यमक अलंकार है। यमक अलंकार वेफ दो भेद हैं–

;1द्ध अभंग पद यमक ;2द्ध सभंग पद यमक।

अभंग पद यमक–जब किसी शब्द को बिना तोड़े मरोड़े एक ही रूप में अनेक बार भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है तब अभंग पद यमक कहलाता है। जैसे–जगती जगती की मूक प्यास। इस उदाहरण में 'जगती' शब्द की आवृत्ति बिना तोड़े–मरोड़े भिन्न–भिन्न अर्थों में ;प. जागती ;पप. जगत ;संसार. हुई है। अतः यह अभंद पद यमक का उदाहरण है। सभंग पद यमक–जब जोड़ तोड़ कर एक ऐसे वर्ण–समूह ;शब्द. की आवृत्ति होती है और उससे भिन्न अर्थों की प्रतीति होती है अथवा वह निरर्थक होता है, तब सभंग पद यमक होता है। जैसे–

पास ही रे हीरे की खान, खोजता कहाँ और नादान?

यहाँ 'ही रे' वर्ण–समूह की आवृत्ति हुई है। पहली बार वही ही + रे को जोड़ कर बना है। इस प्रकार यहाँ सभंग पद यमक है।

उदाहरण ;पाठ्य पुस्तक से.– क्षितिज ;भाग–1. से– या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।। ;अधरान–होंठों पर, अधरा न होंठों पर नहीं.अन्य उदाहरण–

दृ काली घटा का घमंड घटा

;घटा–बादलों का जमघट, घटा–कम हुआ.

दृ माला पफेरत युग भया, पिफरा न मनका पफेर। कर का मनका डारि दै, मन का मनका पफेर।। ;मनका–माला का दाना, मन का–हृदय का.

दृ तू मोहन वेफ उरबसी ह्नै उरबसी समान।

;उरबसी–हृदस में बसी हुई, उरबसी–उर्वशी नामक अप्सरा.

;3द्ध श्लेष अलंकार–श्लेष शब्द का अर्थ है–'चिपका हुआ'। जब एक शब्द में कई अर्थ चिपवेफ हुए होते हैं तब श्लेष अलंकार माना जाता है।

किसी काव्य पंक्ति में जब एक शब्द का एक बार ही प्रयोग होता है किंतु उसवेफ कई अर्थ प्रकट होते हैं, तब श्लेष अलंकार होता है उदाहरणतया–

'मंगन को देख पट देत बार–बार है।'

इस काव्य पंक्ति में 'पट' शब्द का वेफवल एक बार प्रयोग हुआ है, किंतु इसवेफ दो अर्थ सूचित हो रहे हैं–1. कपाट, 2. वस्त्रा। अतः पट शब्द वेफ प्रयोग में श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार वेफ दो भेद हैं–1. अभंग पद श्लेष, 2. सभंग पद श्लेष जब शब्द को बिना तोड़े–मरोड़े उससे एक से अधिक अर्थ प्राप्त हों, तब अभंग पद श्लेष होता है। जैसे–

''जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय। बारे उजियारो करे, बढ़े अंधेरो होय।।''

यहाँ दीपक और वुफपुत्रा का वर्णन है। 'बारे' और 'बढ़े' शब्द दो–दो अर्थ दे रहे हैं। दीपक बारे ;जलाने. पर और वुफपुत्रा बारे ;बाल्य काल. में उजाला करता है। ऐसे ही दीपक बढ़े ;बुझ जाने पर. और वुफपुत्रा बढ़े ;बड़े होने पर. अंधेरा करता है। इस दोहे में 'बारे' और बढ़े शब्द बिना तोड़ मरोड़ ही दो–दो अर्थों की प्रतीति करा रहे हैं। अतः अभंगपद श्लेष अलंकार है। जब किसी शब्द को तोड़कर उससे दो या दो से अधिक अर्थों की प्रतीति होती है, वहाँ सभंग पद श्लेष होता है। जैसे–

रो–रोकर सिसक–सिसक कर कहता मैं करुण कहानी। तुम सुमन नोचते, सुनते, करते, जानी अनजानी।।

यहाँ 'सुमन' शब्द का एक अर्थ है–पफूल और दूसरा अर्थ है–सुंदर मन। 'सुमन' का खंडन सु+मन करने पर 'सुंदर+मन' अर्थ होने वेफ कारण सभंग पद श्लेष अलंकार है। अन्य उदाहरण–

दृ रहिमन पानी राखिये, बिना पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस, चून।।

;पानी वेफ अर्थ हैं–चमक, इज्जत, पानी ;जल..

दृ सुबरन को ढूँढत पिफरत कवि, व्यभिचारी चोर। ;सुबरन= सुंदर वर्ण, सुंदर रंग वाली, सोना.

दृ विपुल घन अनेकों रत्न हो साथ लाए। प्रियतम बतला दो लाल मेरा कहाँ है।। ;'लाल' शब्द वेफ दो अर्थ हैं–पुत्रा, मणि.

दृ मधुवन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ।

;कलियाँ–1. खिलने से पूर्व पफूल की दशा 2. यौवन पूर्व की अवस्था.

;4द्ध उपमा अलंकार–उपमा का अर्थ है–तुलना। जहाँ उपमान से उपमेय की साधारण–धर्म ;क्रिया को लेकर वाचक शब्द वेफ द्वारा तुलना की जाती है।.

उपमा को समझने वेफ लिए उपमा वेफ चार अंगों पर विचार कर लेना समीचीन होगा। ये अंग हैं–;प. उपमेय ;पप. उपमान ;पपप. धर्म ;पअ. वाचक।

;पद्ध उपमेय–जिसकी तुलना की जाती है।

;पपद्ध उपमान–जिससे तुलना की जाती है।

;पपपद्ध समान/साधारण धर्म–जो धर्म उपमान और उपमेय में समान रूप से पाया जाए।

;पअद्ध वाचक शब्द–जिस शब्द विशेष से समानता का बोध हो। जैसे–सा, सी, सरिस, सदृश, सम, जैसा इत्यादि।

उदाहरणतया–उसका मुख चंद्रमा वेफ समान सुंदर है इस कथन में 'मुख' उपमेय है, 'चंद्रमा' उपमान हैऋ 'सुंदर' समान धर्म है और 'समान' वाचक शब्द है।

उपमा वेफ भेद–;1. पूर्णोपमा ;2. लुप्तोपमा ;3. मालोपमा

;1द्ध पूर्णोपमा–जहाँ उपमा वेफ चारों अंग ;उपमेय, उपमान, समान धर्म तथा वाचक शब्द. विद्यमान हों, वहाँ पूर्णोपमा होती है। जैसे–

नील गगन–सा शान्त हृदय था हो रहा।

इस काव्य पंक्ति में उपमा वेफ चारों अंग ;उपमेय–हृदय, उपमान–नील गगन, समान धर्म–शांत और वाचक शब्द–सा. विद्यमान हैं। अतः यह पूर्णोपमा है।

;2द्ध लुप्तोपमा–जहाँ उपमा वेफ चारों अंगों में से कोई एक, दो या तीन अंग लुप्त हों वहाँ लुप्तोपमा होती है। लुप्तोप्मा वेफ कई प्रकार हो सकते हैं। जो अंग लुप्त होता है उसी वेफ अनुसार नाम रखा जाता है। जैसे–

कोटि वुफलिस सम वचन तुम्हारा।

इस काव्य पंक्ति में उपमा वेफ तीन अंग ;उपमेय–वचन, उपमान–वुफलिस और वाचक शब्द–सम.विद्यमान हैं, किंतु समान धर्म का लोप है अतः यह लुप्तोपमा का उदाहरण है। इसे 'धर्मलुप्ता' लुप्तोपमा कहेंगे।

;3द्ध मालोपमा–जब किसी उपमेय की उपमा कई उपमानों से की जाती है, और इस प्रकार उपमा की माला–सी बन जाती है, तब मालोपमा मानी जाती है। जैसे–

'हिरनी से मीन से, सुखंजन समान चारू, अमल कमल से, विलोचन तिहारे हैं।'

'नेत्रा' उपमेय वेफ लिए कई उपमान प्रस्तुत किए गए हैं, अतः यहाँ मालोपमा अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.– क्षितिज ;भाग–1.से–

दृ स्वान रूप संसार है। दृ वेदना बोझ वाली–सी। दृ मृदुल वैभव की रखवाली–सी। दृ चाँदी की सी उजली जाली। दृ रोमांचित सी लगती वसुधा। दृ मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम। दृ सुख से अलसाए–से–सोए। दृ एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा। दृ चँवर सदृश डोल रहे सरसों वेफ सर अनंत।

क्षितिज ;भाग–2. से

दृ कोटि वुफलिस सम बचनु तुम्हारा। दृ सहसबाहु सम सो रिपु मोरा। दृ लखन उतर आहुति सरिस। दृ भृगुबर कोप कृसानु, जल–सम बचन। दृ भूली–सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण। दृ वस्त्रा और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह बंधन हैं स्त्राी जीवन दृ चट्टान जैसे भारी स्वर।

दृ दूध को सो पफेन पफैल्यो आंगन पफरसबंद। दृ तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति। दृ आरसी से अंबर में। दृ आभा सी उजारी लगै। दृ बाल कल्पना वेफ–से पाले। दृ आवाज से राख जैसा वुफछ गिरता हुआ।

वसंत ;भाग–2. से–

दृ घुटनों पर पड़ी है नदी चादर–सी

;5द्ध रूपक अलंकार–जब उपमेय और उपमान में एकरूपता दिखाने वेफ लिए उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाता है तो वहाँ रूपक अलंकार माना जाता है, इसलिए रूपक में 'वाचक' की आवश्यकता नहीं रहती। इसमें उपमेय और उपमान दोनों ही एक रूप होते हैं। उदाहरणतया–

चरण–कमल बंदौ हरिराई।

यहाँ 'चरण' उपमेय और 'कमल' उपमान की एकरूपता द्रष्टव्य है, इसलिए इसमें रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

क्षितिज ;भाग–1. से–

दृ हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ। दृ संतौ भाई आई ग्याँन की आंधी रे। दृ मोह बलिंडा तूटा। दृ सुषुम–सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह। दृ इस काले संकट–सागर पर। दृ प्रकृति का अनुराग–अंचल हिल रहा है।

क्षितिज ;भाग–2. से–

दृ अपरस रहत सनेह तगा तैं। दृ प्रीति–नदी में पाउँ न बोरयौ। दृ उत तैं धार बही। ;रूपकातिशयोक्ति.

दृ हमारैं हरि हारिल की लकरी।

दृ सु तो ब्याधि हम कौं लै आए। दृ मंद हंसी मुखचंद जुन्हाई। दृ जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर। दृ मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि। दृ भानुबंस रावेफस कलंवूफ।

;6द्ध उत्प्रेक्षा अलंकार–उत्प्रेक्षा का शाब्दिक अर्थ है 'देखने की उत्कट इच्छा'। जब उपमेय और उपमान वेफ भिन्न होने पर भी उन्हें समान देखने की उत्कट इच्छा से कवि उनमें समानता की संभावना करता है, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस संभावना वेफ पीछे कवि की अपनी कल्पना होती है। उत्प्रेक्षा अलंकार में मनु, मानो, मनहु, जनु, जानो, जनहु, ज्यों, जैसे शब्दों वेफ द्वारा उपमेय को उपमान मान लिया जाता है। उदाहरणतया–

सिर पफट गया उसका वहीं मानो अरुण रंग का घड़ा।

यहाँ 'पफटा हुआ सिर' उपमेय में 'लाल रंग वेफ घड़ा' उपमान की संभावना होने वेफ कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

क्षितिज ;भाग–1. से–

दृ पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर वेफ

दृ पर वह जताती थी जैसे

ईश्वर से उसकी बातचीत होती रहती है।

क्षितिज ;भाग–2. से–

दृ तुम्ह तो कालु हाँक जनु लावा। दृ पफटिक सिलानि सौं सुधारयौ सुधा मंदिर। दृ जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो। दृ छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल उठे जलजात। दृ पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण। दृ छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेपफालिका वेफ पफूल। दृ जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान। दृ जैसे उसे याद दिलाता हो, उसका बचपन।

;7द्ध मानवीकरण अलंकार–जब निर्जीव पदार्थों में मानवीय गुणों और भावों की कल्पना करवेफ उन्हें मनुष्य वेफ समान कार्य हुआ दिखाया जाता है, तब मानवीकरण अलंकार कहलाता है। उदाहरणतया–

सृष्टि हँसने लगी, आँखों में खिला अनुराग।

इस काव्य पंक्ति में 'सृष्टि हँसने लगी' कहकर अचेतन सृष्टि वो मनुष्यों जैसा कार्य करते हुए दिखाया गया है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों में.

क्षितिज ;भाग–1. से–

दृ तिनको वेफ हरे–हरे दृ लो हरित ध्रा से झाँक रही नीलम की कलि, दृ हँस रही सखियाँ मटर दृ अरहर सनई की सोने की किंकिणियाँ हैं दृ यह हरा ठिगना चना बाँधे मुरैठा दृ बीच में अलसी

तन पर। तीसी नीली। खड़ी। शोभाशाली। शीश पर। हठीली,

देह की पतली, कमर की है लचीली।

दृ और सरसों की न पूछो–हो गई सबसे सयानी। दृ हैं कई पत्थर किनारे पी रहे चुपचाप पानी। दृ टूट पड़ती है भरे जल वेफ हृदय पर। दृ मेघ आए बड़े बन–ठन वेफ संकट वेंफ

दृ आगे–आगे नाचती, गाती बयार चली। दृ पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए। दृ आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए। दृ बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूँघट सरवेंफ

दृ बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की। दृ बोली अवुफलाई लता ओट हो किवार की। दृ हरसाया ताल लाया पानी परात भर वेंफ

- दृ काल कवलु होइहि, छन माहीं।
- दृ अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
- दृ उज्ज्वल गाथा वैफसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
- दृ मेरी भोली आत्मकथा।
- दृ थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।
- दृ बादल गरजो!
- दृ घेर घेर घोर गगन, घराधर ओ!
- दृ कहीं साँस लेते हो।
  घर–घर भर देते हो।
- दृ उड़ने को नभ में तुम पर–पर कर देते हो।
- दृ कहीं पड़ी है उर में मंद–गंध–पुष्प–माल।
- दृ पवन झूलावै, वेफकी–कीर बतरावैं, देव।
- दृ कोकिल हलावै–हुलसावै कर तारी दै।
- दृ मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
- दृ प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।
- दृ सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।
- दृ छाया मत छूना मन, होगा दुःख दूना।
- दृ प्रेरणा साथ छोड़ती हुई, उत्साह अस्त होता हुआ।

;8द्ध पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार–जब किसी पंक्ति में एक शब्द की क्रमशः आवृत्ति तो हो, पर अर्थ भिन्नता न हो, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार माना जाता है।

उदाहरणतया–

;1द्ध सूरज है जग का बुझा–बुझा। ;2द्ध खड़–खड़ करताल बजा।

यहाँ 'बुझा–बुझा' और 'खड़–खड़' शब्दों की आवृत्ति हुई है पर इनवेफ अर्थ में भिन्नता न होने वेफ कारण पुनरुक्ति अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

क्षितिज ;भाग–1. से–

- दृ जी में उठती रह–रह हूक।
- दृ खा–खाकर वुफछ पाएगा नहीं।
- दृ थल–थल में बसता है शिव ही।
- दृ न जैहै, न जैहै, न जैहै।
- दृ तिनकों वेफ हरे–हरे तन पर।
- दृ रंग–रंग वेफ पफूलों पर सुंदर।
- दृ उड़ उड़ वृंतों से वृंतों परे।
- दृ मीठा–मीठा रस टपकाता।
- दृ चुप्पे–चुप्पे।
- दृ आगे–आगे नाचती गाती बयार चली।
- दृ मैं दक्षिण में दूर–दूर तक गया
- दृ सुबह–सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं।
- दृ बहुत छोटे–छोटे बच्चे।

क्षितिज ;भाग–2. से–

- दृ कान्ह–कान्ह जकरी।
- दृ अब इन जोग संदेसनि सुनि–सुनि।
- दृ पुनि पुनि मोही देखाब वुफठारु।
- दृ बार बार मोहि लागि बोलाबा।
- दृ घेर घेर घोर गगन।
- दृ ललित ललित, काले घुँघ्राले।
- दृ विकल विकल, उन्मन थे उन्मन।
- दृ घर–घ्र भर देते हो।
- दृ पर–पर कर देते हो।
- दृ पाट–पाट शोभा–श्री।
- दृ लाख लाख कोटि–कोटि हाथों वेफ स्पर्श की गरिमा।
- दृ हजार–हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म।

;9. अतिश्योक्ति अलंकार–जहाँ किसी वस्तु की प्रशंसा करने वेफ लिए उसका अत्यंत बढ़ा–चढ़ाकर वर्णन किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरणतया–

हनुमान की पूँछ में लगन न पायी आग। लंका सिगरी जल गई, गये निसाचर भाग।।

पूँछ में आग भी न लग पायी थी और सारी लंका जल गई, यह अतिश्योक्ति ;उक्ति की अतिशयता.है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

वसंत ;भाग–3. से–

दृ पानी परात को हाथ छुयो नहीं, नैनन वेफ जल सों पग धोए।

क्षितिज ;भाग–2. से–

दृ छूअत टूट रघुपतिहू न दोसू। दृ तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान, मृतक में भी डाल देगी जान।

अलंकार कक्षा–ग्यारहवीं, बारहवीं

अलंकार शृंगार का साधन होता है। अलंकार या आभूषण को धारण कर नायिकाएँ अपना शृंगार करती हैं। नायिकाओं की ही भांति कविता–कामिनी का शृंगार भी काव्यालंकारों वेफ द्वारा होता है। आचार्य वेफशवदास ने ठीक ही कहा है–

भूषण बिन न विराजई, कविता बनिता मित्त।

इस कथन की सच्चाई को समझने वेफ लिए अलंकार विहीन और अलंकार युक्त उक्ति को देखना उचित होगा–

1. यह चादर सपफेद है
2. यह चादर दुग्ध–पफेन सम श्वेत हैं

इन उक्तियों से उचित संख्या ;1. में कोई अलंकार नहीं है। उक्ति संख्या ;2. में दुग्ध–पफेन सम का प्रयोग कर अलंकार लाया गया है। दोनों उक्तियों में संख्या ;2. की उक्ति अलंकार वेफ प्रयोग से अधिक आकर्षक हो उठी है।

कविता की आत्मा वेफ रूप में रस को स्वीकृति दी गई है, किंतु काव्य वेफ सौंदर्य को निखारने का प्रमुख साधन अलंकार ही है। अतः कहा जा सकता है कि काव्य में सौंदर्य उत्पन्न करने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं। अलंकार तीन प्रकार वेफ होते हैं–

;1. शब्दालंकार ;2. अर्थालंकार ;3. उभयालंकार

जब काव्य में शब्द वेफ कारण सुंदरता का समावेश हो, वे शब्दालंकार कहलाते हैं जैसे– तरणि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये। यहाँ 'त' वर्ण कई शब्दों का प्रथम वर्ण बनकर प्रयुक्त हुआ है। इससे पंक्ति में सौंदर्य आ गया है। चूँकि यहाँ शब्द वेफ कारण सौंदर्य उत्पन्न हुआ है, इसलिए यहाँ शब्दालंकार है। जब किसी काव्य पंक्ति में प्रयुक्त शब्द वेफ अर्थ वेफ कारण सौंदर्य उत्पन्न होता है, तो वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे–

मृदु मंद–मंद, मंथर मंथर लघु तरणि हंसिनी–सी सुंदर तिर रही खोल पालो के पर।

यहाँ 'लघु तरणि' को 'हंसिनी' वेफ समान सुंदर कहा गया है। यहाँ शब्द वेफ कारण सुंदरता का समावेश नहीं बल्कि अर्थ का चमत्कार है। अर्थ करने पर तरणि और हंसिनी का साम्य देखकर मन प्रसन्न हो उठता है। इसीलिए यहाँ अर्थालंकार है। जब किसी काव्य पंक्ति में शब्द और अर्थ, कला और भाव दोनों ही कारणों से सौंदर्य उत्पन्न हो, तो वहाँ उभयालंकार होता है। जैसे–

कजरारी अँखियान में कजरारी न लखात।

इसमें एक ओर तो 'कजरारी' और 'कजरारी' वेफ प्रयोग से शाब्दिक सौंदर्य प्रकट हुआ है, वही दूसरी ओर कजरारी आँखों में काजल न दीख पड़ने वेफ कारण अर्थ का सौंदर्य स्पष्ट हुआ है अतः यहाँ उभयालंकार है।

अलंकार के भेद

1. अनुप्रास अलंकार–जब समान व्यंजनों की आवृत्ति अर्थात् उनवेफ बार–बार प्रयोग से कविता में सौंदर्य की उत्पत्ति होती है तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास अलंकार में व्यंजन की आवृत्ति का ही महत्त्व मान्य है, स्वरों की आवृत्ति को स्वीकार नहीं किया गया है। अनुप्रास वेफ पाँच भेद हैं– ;1. छेकानुप्रास ;2. वृत्यानुप्रास ;3. अन्त्यानुप्रास ;4. लाटानुप्रास ;5. श्रुत्यनुप्रास। इनमें प्रथम दो का विशेष महत्त्व है। उनका परिचय इस प्रकार है–

;1द्ध छेकानुप्रास–जब किसी व्यंजन की वेफवल एक बार निश्चित क्रम से आवृत्ति होती है, तो छेकानुप्रास होता है। इस प्रकार किसी व्यंजन का एक ही क्रम में वेफवल दो बार प्रयोग होने पर छेकानुप्रास होता है। उदाहरण–

'इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।'

इस पंक्ति में 'करुणा' और कलित' शब्द वेफ आरंभ–क्रम में 'क' का दो बार प्रयोग होने वेफ कारण छेकानुप्रास है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

1. मुसलमान वेफ पीर–औलिया मुर्गी मुर्गा खाई। ;कबीर. 2. बाहर से इक मुर्दा लाए धोय–धाय चढ़वाई। ;कबीर. 3. तुम बिन दुखिया देह रे। ;कबीर.

4. सब कोई कहै तुम्हारी नारी, मोको लागत लाज रे। ;कबीर.

5. अब तो बेहाल कबीर भयो है, बिन देखे जिव जाय रे। ;कबीर. 6. खेलन में को काको गुसैयाँ। ;सूरदास.

7. हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस ही कत करत रिसैयाँ। ;सूरदास.

8. सूरदास प्रभु खेल्योइ चाहत, दाऊँ दिया करि नंद–दुहैयाँ। ;सूरदास. 9. आपुनि पौढ़ि अधर सज्जा पर, कर पल्लव पलुटावति। ;सूरदास. 10. भृवुफटी वुफटिल, नैन नासा–पुट, हम पर कोप करावति। ;सूरदास. 11. अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति। ;सूरदास.

12. चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद ;सपना. ;देव.

13. 'देव' तहाँ निबरे नट की बिगरी मति को सगरी निसि नाच्यो ;दरबार. 14. और भाँति वुफंजन में गुंजरत भीर भौंर ;पद्माकर.

15. जौ लगि कछू–को–कछू भाखत गनै नहीं ;पद्माकर. 16. तो लौ चलित चतुर सहेली याहि कौऊ कहूँ ;पद्माकर. 17. मंजुल मलारन को गावनो लगत है। ;पद्माकर.18. हिंडोरन को वृंद छवि छावनो लगत है। ;पद्माकर. 19. मौन मंद आभा में ;संध्या वेफ बाद–पंत.20. दैन्य दुःख अपमान ग्लानि ;संध्या वेफ बाद–पंत. 21. घुसे घरौंदों में मिट्टी वेफ ;संध्या वेफ बाद–पंत.22. पशु पर पिफर मानव की हो जय? ;संध्या वेफ बाद–पंत. 23. चिर सजग आँखें उनींदी आज वैफसा व्यस्त बाना ;महादेवी. 24. इसमें ढलते सब रंग–रूप ;महादेवी.25. जब–जब श्वान– शृंगाल भूँकते ;नरेंद्र शर्मा. 26. बेबस उस चकवा–चकई का ;नागार्जुन. 27. तरल–तरुण कस्तूरी मृग को ;नागार्जुन. 28. जाने दो, वह कवि–कल्पित था ;नागार्जुन. 29. शत–शत निर्झर–निर्झरणी–कल ;नागार्जुन.30. रजत–रचित मणि–खचित कलामय ;नागार्जुन. 31. पान पात्रा द्राक्षासव पूरित ;नागार्जुन.32. नरम निदाद्य बाल कस्तूरी ;नागार्जुन. 33. उन्मद किन्नर–किन्नरियों की ;नागार्जुन. 34. मृदुल मनोरम अंगुलियो को ;नागार्जुन. 35. तीर्थ–यात्राा की बस वेफ ;धूमिल.दो पंचर पहिए हैं।

पाठ्य पुस्तक ;बारहवीं.–;अंतरा–भाग–2.

1. श्रमित स्वप्न की मधुमाया में ;देवसेना काव्य. 2. मैंने निज दुर्बल पद–बल पर ;देवसेना काव्य. 3. लौटा लो यह अपनी थाती। ;देवसेना काव्य. 4. शीतल मलय समीर सहारे ;कानैलिया काव्य.

5. बरसाती आँखों वेफ बादल–बनते जहाँ भरे करुणा जल ;कानैलिया काव्य गीत. 6. मदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा। ;कानैलिया काव्य गीत.

7. गीत गाने दो मुझे ;निराला.

8. देखते हैं लोग लोगों को ;निराला.

9. नत–नयनों से आलोक उतर ;सरोज–स्मृति. 10. तेरे हित सदा समस्त, व्यस्त ;सरोज–स्मृति.

11. यह जन है–गाता गीत जिन्हें पिफर और कौन गाएगा? ;यह दीप अवेफला. 12. सदा श्र(ामय इसको भी भक्ति को दे दो ;यह दीप अवेफला.13. सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में ;बनारस. 14. दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को ;बनारस. 15. कभी सई–साँझ ;बनारस.16. अपनी दूसरी टाँग से ;बनारस. 17. बिल्वुफल बेखर ;बनारस.18. पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी वेफ लिए ;एक कम. 19. मैंने अपने को हटा लिया है हर होड़ से ;एक कम.20. अपनी कहीं और देखती दृष्टि से हमारी आँखों में देखता हुआ ;सत्य. 21. बड़े–बड़े पियराए पत्ते ;बसंत आया.22. अमुक दिल अमुक बार मदन महीने की होवेगी पंचमी ;बसंत आया. 23. हम इसको क्या कर डाले इस अपने मन की खीज को ;तोड़ो.सरीर सभा, नीरज नयन, मोर मुनिनाथा, निज नाथ, ;भरत–राम का प्रेम. खेलत खुनिस, जियँ जोही, सनेह सकोच प्रेम पिआसे,

सवेफऊ सहि, मातुमंदि, साधु सुचाली, कोटि वुफचाली, कहि कावूफ, प्रेम वन, सबु साखी, नर नारी, सिय साथा, संकरू साखि, निहारि निज़ाद, वुफलिस कठिन सबइ सहाई,

24. सखा सब, बहुरो बनहि, सौगुनी सार ;तुलसीदास पद.

25. दूभर दुख, किमि काढ़ी, दुख दगध जोबन जरम, ;बारहमासा. पहिर पटोरा, तन तिनुवर, पियर पात, मन मोरे, मरत मोहि

26. पिअतम पास, दुख दारून, मोर मन, हरि हर, कइसन वेफलि, ;विद्यापति पद. अनुमोदए अनुभव, वुफसुमित कानन, कोकिल–कलख, बेरि बइसइ, चौदसि–चाँद

27. उदित उदार, भावी भूत, जगजीव जतीन, ;वेफशवदास. तेलन, तूलनि, जराइ–जरी, बारिधि बाँधिवेफ, बाँधोई बाँधत

28. पयान प्रान, चाहत चलन, करौगे कौलों, पनि पालिहौ, ;घनानंद. प्रान पले, जात जरे, पूरन प्रेम, मंत्रा महा, सोधि सुधारि चारु–चरित्रा, रचि राखि, हियो हितपत्रा।

;2द्ध वृत्यानुप्रास–एक व्यंजन को एक ही क्रम में दो या से अधिक बार आवृत्ति होने पर वृत्यानुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण–

'तरनि तनुजा तट तमाल तरूवर बहु छाये।'

इस उदाहरण में 'त' की आवृत्ति शब्द वेफ प्रारंभ में चार बार हुई है। शब्दों का आरंभिक वर्ण 'त' है। इसलिए यहाँ वृत्यनुप्रास है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.– अंतरा ;भाग–1. से– 1. जा दिन तै मुख पफेरि हरै हँसि, हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि ;हँसी की चोट. 2. झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो ;सपना.

3. घहरि–घहरि घटा घेरी है गगन में ;सपना.
4. छलिया छबीले छैल औरें छवि छवै गए ;पद्माकर.
5. हौं तो स्याम–रंग में चुराई चित चोरी चोरी ;पद्माकर. 6. सिकता, सलिल, समीर सदा से ;संध्या वेफ बाद.
7. रहते स्वच्छ सुघर सब परिजन? ;संध्या वेफ बाद.
8. रात किसी की कट जाती है? ;नींद उचट जाती है. 9. देख–देख दुःस्वप्न भयंकर ;नींद उचट जाती है. 10. भीत भावना, भोर सुनहली ;नींद उचट जाती है.

अंतरा ;भाग–2. से–

1. वह हममें विलीन हुआ या हमसे होता हुआ आगे बढ़ गया ;सत्य. 2. दहर–दहर दहवेंफगे कहीं ढाक वेफ जंगल ;बसंत आया.
3. यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनी समुझि साधु सुचि को भा।
4. बिनु समुझे निज अघ परिपाक्। जारिउँ जायँ जननि कहि कावूफ। ;भरत राम का प्रेम. 5. ह्दयँ हेरि हारेऊँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा। ;भरत राम का प्रेम.
6. महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला। ;भरत राम का प्रेम. 7. बिन पानहिन्ह पयादेहि पाएँ। संकरू साखि एहेउँ ऐहि घाएँ।। ;भरत राम का प्रेम.
8. तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि। ;भरत राम का प्रेम.
9. ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ। ;तुलसी–पद.
10. जे पय प्याइ पोखि कर–पकंज बार–बार चुचुकारे। ;तुलसी–पद.
11. सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल ;विद्यापति–पद. 12. धरनि धरि धनि कत बेरि बइसइ। ;विद्यापति–पद.
13. बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन बारिधि बाँधि वेफ बाट करी ;अंगद.

;2. यमक अलंकार–'वहै शब्द पुनि–पुनि परै अर्थ भिन्न ही भिन्न' अर्थात् यमक अलंकार में एक शब्द का दो या दो से अधिक बार प्रयोग होता है और प्रत्येक प्रयोग में अर्थ की भिन्नता होती है। उदाहरण–

'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय। वा खाए बौराय जग, या पाये बौराय।।'

इस छंद में 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। एक 'कनक' का अर्थ है 'स्वर्ण' और दूसरे का अर्थ है 'धतूरा'। इस प्रकार एक ही शब्द का भिन्न–भिन्न अर्थ में दो बार प्रयोग होने वेफ कारण 'यमक अलंकार है। यमक वेफ दो भेद हैं–

;1द्ध अभंगपद यमक ;2द्ध सभंगपद यमक

जब शब्द को बिना तोड़े–जोड़े एक से अधिक बार प्रयुक्त कर भिन्न अर्थ ज्ञापित किया जाता है तब अभंगपद यमक होती है, यथा–'कनक–कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में कनक शब्द का प्रयोग। जब शब्द की आवृत्ति तोड़–जोड़ वेफ साथ होती है और अर्थ में इस आधार पर भिन्नता प्रकट होती है तब सभंगपद यमक अलंकार होता है, यथा–कर का मन का डारि वेफ मन का मनका पफेरि।'

इस उदाहरण में 'मनका' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। प्रथम और तृतीय प्रयोग में कोई तोड़ या जोड़ नहीं है और उनका अर्थ माला है। द्वितीय प्रयोग में 'मनका' रूप द्रष्टव्य है। ध्वनि वेफ रूप में यह 'मनका' रूप है किन्तु 'मनका' का भंग रूप 'मन का' 'ह्दय का' वेफ अर्थ को सूचित कर रहा है। इसी रूप वेफ कारण यहाँ सभंगपद यमक अलंकार है। अन्य उदाहरण–;पाठ्य पुस्तकों से.

अंतरा ;भाग–1.–

;1. जा दिन तै मुख पफेरि हरै हँसि, हेरि हियो जु लिया हरि जू हरि।। ;हँसी की चोट.

यहाँ ;प. हरि का अर्थ है–कृष्ण ;पप. हरि का अर्थ है–चुराना

;पद्ध लाख लाख जुगन हिअ हिअ राखल तइओ हिअ जरनि न गेल। ;विद्यापति.

यहाँ हिअ हिअ वेफ दो अर्थ है–;प. हिअ का अर्थ है प्रेमी, ;पप. हिअ का अर्थ है–हृदय

;पपद्ध निघटी रूचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी ;पंचवटी.

यहाँ घटी वेफ अर्थ है–;प. घटी का अर्थ है–घड़ी और ;पप. घटी का अर्थ है–कम होना।

;पपपद्ध तेलनि तूलनि पूँछ जरी न जरी, जरी लंक जराइ जरी।। ;अंगद.

यहाँ जरी का अर्थ है–जल गई और दूसरे जरी शब्द का अर्थ है–जड़ी हुई।

;पअद्ध हित–तोष वेफ तोष सु प्रान पले ;पोषण, संतुष्ट. ;घनानंद.

;अद्ध तब हार पहार से लागत है, अब आनि वेफ बीच पहार परे। ;घनानंद.

;3. श्लेष अलंकार–'श्लेष' शब्द का अर्थ है–'चिपका हुआ'। जब एक शब्द में कई अर्थ चिपवेफ हुए होते हैं, तब श्लेष अलंकार माना जाता है। किसी कविता में जब एक शब्द का एक बार ही प्रयोग होता है, किंतु उसवेफ कई अर्थ प्रकट होते हैं, तब श्लेष अलंकार होता है। उदाहरण–

'मंगन को देख पट देते बार–बार है।'

इस काव्य–पंक्ति 'पट' शब्द का वेफवल एक बार प्रयोग हुआ है किंतु इसवेफ दो अर्थ सूचित हो रहे हैं– ;1. कपाट ;2. वस्त्रा। अब 'पट शब्द वेफ प्रयोग से श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार वेफ दो भेद हैं–

;पद्ध अभंगपद श्लेष ;पपद्ध सभंगपद श्लेष

अभंगपद श्लेष–जब शब्द को बिना तोड़े–मरोड़े इससे एक से अधिक अर्थ प्राप्त हों, तब अभंगपद श्लेष होता है। 'मंगन को देख पट देत बार–बार है' में 'पट' वेफ दो अर्थ प्राप्त करने वेफ लिए उसे तोड़ा नहीं गया है, अतः यहाँ अभंगपद श्लेष अलंकार है। सभंगपद श्लेष–जब किसी शब्द को तोड़कर उससे दो या दो से अधिक अर्थ निकाले जाते हैं। तब सभंगपद श्लेष मान्य होता है। उदाहरण–

'रो–रोकर सिसक–सिसक कर कहता मैं करुण कहानी। तुम सुमन नोचते, सुनते करते जानी अनजानी।।

यहाँ 'सुमन' शब्द का प्रयोग श्लेष अलंकार को प्रस्तुत कर रहा है। इसका एक अर्थ है–'पफूल' और दूसरा अर्थ है–'सुंदर मन'। सुमन का खण्डन सु + मन करने पर 'सुंदर + मन' का अर्थ होने वेफ कारण 'सभंगपद श्लेष' है।

अन्य उदाहरण–;पाठ्य पुस्तकों से.–

;पद्ध अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति ;सूरदास)
यहाँ नार शब्द वेफ दो अर्थ है–;1. गर्दन ;2. नारी
;पपद्ध हौं तो स्याम–रंग में चुराई चित चोरा चोरी। ;पद्माकर. बोरत तौं बोर्‌यो पै निचोरत बनै नहीं।
यहाँ 'स्याम' वेफ दो अर्थ हैं–;1. काला ;2. कृष्ण

अंतरा ;भाग–2.–

;पद्ध यह दीप अवेफला स्नेह भरा ;यह दीप अवेफला.
यहाँ स्नेह वेफ दो अर्थ है–;1. तेल ;2. प्रेम
;पपद्ध अब ना घिरत घन आनंद निदान को।
;1द्ध बादल ;2. कवि का नाम

;4द्ध पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार–जब किसी काव्य पंक्ति में एक शब्द की क्रमशः आवृत्ति तो हो, पर अर्थ–भिन्नता न हो, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार माना जाता है। उदाहरण–
;पद्ध सूरज है जग का बुझा–बुझा। ;पपद्ध खड़–खड़ करताल बजा।
यहाँ 'बुझा–बुझा' और 'खड़–खड़' शब्दों की आवृत्ति हुई है। पर इनवेफ अर्थ में भिन्नता न होने वेफ कारण यहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। अन्य उदाहरण पाठ्यपुस्तकों से–

अंतरा ;भाग–1. से–

1. झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि–घहरि घटा घेरी है गगन में ;सपना. 2. भूँक–भूँककर लड़ते वूफकर,
हुआँ–हुआँ करते सियार ;संध्या वेफ बाद.
3. बात–बात पर झूठ बोलता, कौड़ी की स्पर्धा में मर–मर ;संध्या वेफ बाद. 4. अपनी–अपनी सोच रहे जन ;संध्या वेफ बाद.

5. आलोक लुटाता वह घुल–घुल ;सब आँखों वेफ आँसू उजले. 6. शत–शत निर्झर में हो चंचल ;सब आँखों वेफ आँसू उजले. 7. देख–देख दुःस्वप्न भयंकर ;नींद उचट जाती है. 8. चौंक–चौंक उठता हूँ डरकर ;नींद उचट जाती है. 9. जब–जब श्वान शृंगाल भूँकते ;नींद उचट जाती है. 10. छोटे–छोटे मोती जैसे ;बादल को घिरते देखा है.11. मंद–मंद था अनिल बह रहा ;बादल को घिरते देखा है. 12. अलग–अलग रहकर ही जिनको ;बादल को घिरते देखा है. 13. गरज–गरज भिड़ते देखा है ;बादल को घिरते देखा है.14. शत–शत निर्झर–निर्झरणी–कल ;बादल को घिरते देखा है. 15. रखे सामने अपने–अपने ;बादल को घिरते देखा है.अंतरा ;भाग–2.– 1. छल–छल थे संध्या वेफ श्रम कण ;देवसेना का गीत. 2. मेरी करुणा हा–हा खाती ;देवसेना का गीत.3. विश्वास–स्तब्ध बँध अंग–अंग ;देवसेना का गीत. 4. काँपा अधरों पर थर–थर–थर। ;देवसेना का गीत. 5. इसी तरह रोज–रोज एक अनंत शव ;बनारस.

6. इस शहर में धूल धीरे–धीरे उड़ती है धीरे–धीरे चलते हैं लोग धीरे–धीरे बजते हैं घंटे
शाम धीरे–धीरे होती है ;बनारस.

7. राख और रोशनी वेफ ऊँचे–ऊँचे स्तंभ ;बनारस. 8. उधर–उधर उसने कहा ;दिशा.
9. जैसे धर्मराज वेफ बार–बार दुहाई देने पर ;सत्य.
10. और उनमें से उनका आलोक धीरे–धीरे आगे बढ़कर ;सत्य.

11. हमारी आत्मा में जो कभी–कभी दमक उठता है ;सत्य. 12. बड़े–बड़े पियराए पत्ते ;बसंत आया.
13. ऐसे, पुफटपाथ पर चलते–चलते चलते ;बसंत आया. 14. दहर–दहर दहवेंफगे कहीं ढ़ाक वेफ जंगल ;बसंत आया.15. मधुमस्त पिक और आदि अपना–अपना कृतित्व ;बसंत आया. 16. तोड़ो तोड़ो तोड़ो ;तोड़ो.17. आधे आधे गाने ;तोड़ो. 18. गोड़ो गोड़ो गोड़ो ;तोड़ो.19. बार–बार उर नैननि लावति प्रभु जू की ललित पहनियाँ ;तुलसीपद. 20. धर धर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रंग लै गा नाहू।। ;बारहमासा.
21. पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ पिफरै पिफरै रंग सोई।। ;बारहमासा.
22. सियरि अगिनि बिरहिनि जिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा।। ;बारहमासा. 23. पूस जाड़ थर थर तन काँपा। ;बारहमासा.
24. बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ। 25. पहल पहल तन रूई जो झाँपे। हहलि हहलि अधिकौ हिय काँपै।।। 26. तरुवर झरै झरै बन ढाँखा। भइ अनपत्त पफूल पफर साखा।।
27. सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए।। ;विद्यापति–पद.
28. लाख लाख जुगहिअ हिअ राख तइओ हिअ जरनि न गेल। ;विद्यापति–पद. 29. माधव सुन सुन वचन हमारा। ;विद्यापति–पद.
30. गुनि गुनि प्रेम तोहारा।। ;विद्यापति–पद.
31. कातर दिठि करि, चौदसि हेरि–हेरि। ;विद्यापति–पद. 32. तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन ;विद्यापति–पद.
33. देवता प्रसि(सि(रिज़िराज तषवृ(कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई ;रामचंद्र चंद्रिका. 34. पति बनै चारमुख, पूतबर्नै पाँचमुख नातीबर्नै षटमुख तादपि नई नई। ;रामंद्र चंद्रिका.35. कहि कहि आवन छबीले मनभावन को ;घनानंद, कवित्त. 36. गहि गहि राखति ही दै दै सनमान कौ ;घनानंद, कवित्त.

;5द्ध उपमा अलंकार–अर्थालंकारों में उपमा का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं उपमा को समझने वेफ लिए उपमा वेफ चार अंगों पर विचार कर लेना समीचीन होगा। ये अंग हैं–;1. उपमेय ;2. उपमान ;3. धर्म ;4. वाचक।

उपमेय–जिसकी उपमा ;तुलना. की जाती है उसे उपमेय कहते हैं। उपमान–जिससे उपमेय की उपमा ;तुलना. दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। धर्म–उपमेय और उपमान जिन गुणों वेफ कारण एक दूसरे वेफ समान दर्शाए जाते हैं, उन गुणों को धर्म कहते हैं। वाचक–वाचक वह शब्द है जिससे उपमेय और उपमान की समता की सूचना मिलती है। उदाहरण– 'उसका मुख चंद्रमा वेफ समान सुंदर है'–इस कथन में 'मुख' उपमेय है, 'चंद्रमा' उपमान है, 'सुंदर' धर्म है और 'समान' वाचक है। अन्य वाचक शब्द हैं–सा, सी, से, सरिस, सदृश, सम, जैसा आदि। उपमा वेफ चार अंगों वेफ संबंध में जानकारी प्राप्त कर लेने वेफ पश्चात् स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि– उपमा वह अर्थालंकार है जिसवेफ द्वारा उपमेय और उपमान में समान धर्म वेफ आधार पर समता स्थापित की जाती है।

उपमा के भेद–;1. पूर्णोपमा ;2. लुप्तोपमा ;3. मालोपमा पूर्णोपमा–जब उपमा वेफ चारों अंग वर्तमान रहते हैं तब पूर्णोपमा होती है। उदाहरण–

'नील गगन सा शांत हृदय था हो रहा।'

इस पंक्ति में हृदय उपमेय है, 'नील गगन' उपमान है, 'शांत' धर्म है और 'सा' वाचक है। अतः यहाँ पूर्णोपमा है। लुप्तोपमा–उपमा वेफ चार अंगों में से जब कोई अंग लुप्त होता है, तब लुप्तोपमा होती है। जैसे– 'वुफंद रंदु सम देह' में धर्म लुप्त है। अतः इस पंक्ति में धर्मलुप्तोपमा है। इसी प्रकार उपमेय वेफ लोप से उपमेय लुप्तोपमा अलंकार, उपमान वेफ लोप से उपमान लुप्तोपमा अलंकार, वाचक वेफ लोप से वाचक लुप्तोपमा अलंकार का प्रकाशन होता है। मालोपमा–जब किसी उपमेय की उपमा कई उपमानों से की जाती है, और इस प्रकार उपमा की माला–सी बन जाती है, तब मालोपमा मानी जाती है। जैसे–

'हिरनी से, मीन से, सुखंजन समान चारू, अमल कमल से, विलोचन निहारे हैं।'

'नेत्रा' उपमेय वेफ लिए कई उपमान प्रस्तुत किए गए हैं, अतः यहाँ मालोपमा अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

अंतरा ;भाग–1. से–

1. ताम्रवर्ण पीपल से, शतमुख ;संध्या वेफ बाद.
झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर
2. ज्योति स्तंभ सा धँस सरिता में
सूर्य क्षितिज पर होता ओझल ;संध्या वेफ बाद.
3. बृहद् जिह्व विश्लथ वेंफचुला सा ;संध्या वेफ बाद. लगता चितकबरा गंगाजल 4. दीपशिखा सा ज्वलित कलश
नभ से उठकर करता नीराजन। ;संध्या वेफ बाद.

5. तट पर बगुलों सी वृ(एँ, विधवाएँ जप ध्यान में मगन ;संध्या वेफ बाद. 6. दूर तमस रेखाओं सी
उड़ती पंखों की गति–सी चित्रित ;संध्या वेफ बाद. 7. स्वर्ण चूर्ण–सी उड़ती गोरज किरणों की बादल–सी जलकर ;संध्या वेफ बाद. 8. सनन तीर सा जाता नभ से ज्योतित पंखों कंठों का स्वर ;संध्या वेफ बाद. 9. माली की मंडई से उठ
नभ वेफ नीचे नभ सी धूमाली ;संध्या वेफ बाद. मंद पवन में तिरती नीली रेशम की–सी हल्की जाली।

10. जड़ अनाज वेफ ढेर सदृश ही ;संध्या वेफ बाद. वह दिन–भर बैठा 11. शहरी बनियों–सा वह भी उठ ;संध्या वेफ बाद. क्यों बन जाता नहीं महाजन?
12. नभ तारक–सा खंडित पुलकित ;सब आँखों वेफ आँसू उजले. वह क्षुर–धारा को चूम रहा
वह अंगारों का मधु–रस पी
वेफशर–किरणों सा झूम रहा।

13. छोटे–छोटे मोती जैसे ;बादल को घिरते देखा है. उसवेफ शीतल तुहिन कणों को 14. शंख सरीखे सुघढ़ गलों में ;बादल को घिरते देखा है.

अंतरा ;भाग–2. से–

1. छलछल थे संध्या वेफ श्रम कण ;देवसेना का गीत. आँसू से गिरते थे प्रतिक्षण 2. लघु सुरधनु से पंख पसारे–शीतल मलय समीर सहारे ;कार्नेलिया का गीत. 3. इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत वेफ–से सतदल ;सरोज–स्मृति.

4. यदि हम किसी तरह युधिष्ठिर जैसा संकल्प पा जाते हैं ;सत्य. 5. अंतिम बार देखता–सा लगता है वह हमें ;सत्य.
और उसमें से उसी का हल्का–सा प्रकाश जैसा आकार समा जाता है हममें 6. खिली हुई हवा आई, पिफरकी–सी आई, चली गई ;वसंत आया.

7. कबहुँ समुझि वनगमन राम को रहि चकि चित्रालिखी–सी तुलसीदास वह समय कहें तें लागति प्रीति सिखी–सी 8. चकई निसि बिछुरैं दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिल ;बारहमासा. 9. धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहुँ पंख ;बारहमासा.

10. नैन चुवहिं जस माँहुट नीरु। तेहि जल अंग लाग सब चीरु। ;बारहमासा. 11. तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होइ झोरा। ;बारहमासा. 12. टूटहिं बूँद परहिं जस ओला। बिरह पवन होई मारैं झोला। ;बारहमासा. 13. तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई तन तिनुवर भा डोल। ;बारहमासा.14. तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन–;विद्यापति पद. चौदसि–चाँद–समान।

;6द्ध रूपक अलंकार–जब उपमेय और उपमान में एक एकरूपता दिखाने वेफ लिए उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाता है तो वहाँ रुपक अलंकार माना जाता है। इसीलिए रूपक में 'वाचक' की आवश्यकता नहीं रहती। इसमें उपमेय और उपमान दोनों ही एक रूप होते हैं। उदाहरण–

चरण–कमल बंदौ हरिराई।

यहाँ 'चरण' उपमेय और 'कमल' उपमान की एक रूपता द्रष्टव्य है, इसलिए इसमें रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

अंतरा ;भाग–1. से–

1. आपुन पोढ़ि अधर सज्जा पर, कर पल्लव पलुटावति ;सूरदास.
2. नीलम मरकत वेफ संपुट दो ;सब आँखों वेफ आँसू उजले. जिनमें बनता जीवन–मोती। 3. नहीं गई भव–निशा अँधेरी ;नींद उचट जाती है.
4. और भाषा वेफ भुन्नासी तालों को खोलते ;घर में वापसी.

अंतरा ;भाग–2. से–

1. चढ़कर मेरे जीवन–रथ पर ;देव सेना का गीत.
2. हेम वुफंभ ले उषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे ;कार्नेलिया का गीत. 3. यह गोरस–जीवन–कामधेनु का अमृत–पूत पय ;यह दीप अवेफला.
4. अपने मन वेफ मैदानों पर व्यापी वैफसी ऊब है ;तोड़ो. 5. नीरज नयन नेह जल बाढ़े ;भरत–राम का प्रेम.
6. मोर अभाग उदधि अबगाहू है ;भरत–राम का प्रेम.
7. जे पय प्यार पोखि कर पकंज वार वार चुचकारे ;तुलसी–पद.
8. विरह सैचान भवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा। ;बारहमासा. 9. बिरहा काल भयऊ जड़काला ;बारहमासा.
10. बिरह पवन होई मारैं झोला ;बारहमासा. 11. तू सो भँवर सोर जोवन पफूलू ;बारहमासा.12. वुफसुमित कानन हेरि कमल मुखि ;विद्यापति –पदावली. 13. चहुँ ओरनि नाचति मुक्ति नटी ;लक्ष्मण–उर्मिला.14. ऐसो हियो हित पत्रा पवित्रा जो आन–कथा न कहू अवरेख्यौ ;घनानंद.

;7द्ध उत्प्रेक्षा अलंकार–उत्प्रेक्षा का शाब्दिक अर्थ है–'देखने की उत्कट इच्छा।' जब उपमेय और उपमान वेफ भिन्न होने पर भी उन्हें समान देखने की उत्कट इच्छा से कवि उनमें समानता की संभावना करता है, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस संभावना वेफ पीछे कवि की अपनी कल्पना होती है, उत्प्रेक्षा अलंकार में 'मनु', 'जनु', मानों, जानों, मनहुँ, जनहुँ, ज्यों, जैसे आदि वाचक शब्द प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण–

सिर पफट गया उसका वहाँ मानो अरुण रंग का घड़ा।

अन्य उदाहरण ;पाठ्यपुस्तकों से.–

अंतरा भाग–1 से–

1. कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे ;कबीर पद. 2. क्षीण ज्योति ने चुपवेफ ज्यों ;संध्या वेफ बाद.गोपन मन को दे दी हो भाषा।

अंतरा भाग–2 से–

1. मामा–मामी का रहा प्यार ;सरोज स्मृति. भर जलद धरा को ज्यों अपार 2. कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो ;वसंत आया. 3. जैसे बहन 'दा' कहती है ;वसंत आया. ऐसे किसी बँगले वेफ किसी तरु पर कोई चिड़िया वुफउकी

4. तदपि दिनहिं दिन होता झाँवरे मनहुँ कमल हिमसारे ;तुसली–पद.

5. अब धनि देवस बिरह आ राती। जरै बिरह ज्यो दीपक बाती ;बारहमासा. 6. सौर सुपेती आवै जूझप जानहुँ सेज हिव चल बूडी।। ;बारहमासा.

7. पफाग करहि सब चांचरि जोरी। मोहि जिय लाइ दीन्हि असि होरी।। ;बारहमासा.

;8द्ध अतिश्योक्ति अलंकार–जिस काव्य पंक्ति में किसी वर्ण्य वस्तु का अतिरिक्त वर्णन होता है अर्थात् उसवेफ संबंध में बढ़ा–चढ़ाकार कहा जाता है, तब अतिश्योक्ति मानी जाती है। उदाहरण–

हनुमान की पूँछ में लगन न पायी आग। लंका सिगरी जल गई, गये निसाचर भाग।।

बूँद से आग लगी न लग पाथी थी और लंका जल गई, यह अतिश्योक्ति उक्ति की अतिशयता है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

अंतरा ;भाग–1. से–

1. साँसनि ही सौं समीर गयो अरु, आँसुन ही सब नीर गयो ढरि। ;हँसी की चोट. 2. तेज गयो गुन लै अपनो, अरु भूमि गई तन की तनुता करि।। ;हँसी की चोट.

अंतरा ;भाग–2. से–

1. रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख ;बारहमासा. धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।

2. पिय सो कहेहु सँदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।;बारहमासा. सो धनि बिरहें जरि गई तेहिक धुआँ हम लाग।।

3. वेफहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियँ नहि हार रही होई डोरा।। ;बारहमासा. 4. तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई तन तिनुवर भा डोल।

तोहि पर बिरह जराइ वेफ चहै उड़ावा झोल।।

5. वुफसुमित कानन हेरि कमल मुखि ;विद्यापति पद. मूदि रहए दु नयनि ;पूर्ण पद में अतिश्योक्ति है.

6. कत मधु जागिनि रस गमाओनि न बूझल कइसन वेफलि ;बारहमासा. 7. नयन गरए जलधारा ;बारहमासा.

8. बानी जगरानी की उदारता जाइ ऐसी मति उदित उदार कौन की भई

9. पति बनै चारमुख पफूल बनैं पाँचमुख बाँसी बनै षट्मुख तदपि नई नई।। 10. चहुँ ओरनि नाचति मुक्ति नटी गुन चूर नटी जटी पंचवटी ;लक्ष्मण उर्मिला. 11. अधर लगे हैं आनि कहिवेफ प्रयाना पान ;घनानंद. चाहत चलन ये सँदेसौ लै सुजान को

;9द्ध अप्रस्तुत प्रशंसा ;अन्योक्ति.अलंकार–

अप्रस्तुत का वर्णन कर जब प्रस्तुत का कथन किया जाता है तब अप्रस्तुत प्रशंसा अर्थात् अन्योक्ति अलंकार माना जाता है। उदाहरण–

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल। अली कला ही सो बिध्यों आगे कौन हवाल।।

यहाँ अप्रस्तुत अर्थ 'कली' और 'भ्रमर' वेफ वर्णन से प्रस्तुत अर्थ राजा जयसिंह और उनकी नवविवाहिता रानी की प्रतीति कराई गई है। अतः यहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार है। अन्य उदाहरण–

1. एक सरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए ;विद्यापति पद. 2. सखि अनकर दुःख दारुन रे जग वेफ पतिआए। ;विद्यापति पद.3. आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौलो? ;घनानदं.

;10द्ध विशेषोक्ति अलंकार–कारण वेफ उपस्थित होने पर भी कार्य न होने की दशा में विशेषोक्ति अलंकार माना जाता है। उदाहरण–

'नीर भरे निसिदिन रहें, तऊ न प्यास बुझाय'

इस पंक्ति में प्यास बुझाने का कारण 'नीर' उपस्थित है, पर प्यास बुझने का कार्य नहीं हो पा रहा है। अतः विशेषोक्ति अलंकार है।

1. सेहो मधुर बोल स्रवनहिं सूनल स्रुति पथ परस न गेल। ;विद्यापति–पद. अंतरा भाग–2

2. देवता प्रसि(सि(रिजिराज तपवृ(कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई ;रामचंद्र चंद्रिका. अंतरा भाग–2

;11द्ध विरोधाभास अलंकार–जहाँ दो वस्तुओं में मूलतः विरोध न होने पर भी विरोध वेफ आभास का वर्णन किया जाए, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। विरोध प्रतीत तो हो किंतु वास्तव में वह विरोध न होकर वेफवल उसका आभास ही हो, तो विरोधाभास अलंकार होता है। उदाहरण–

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय। ज्यो ज्यो बूड़े श्याम रंग, त्यों त्यों उज्जवल होय।।

अन्य उदाहरण–

1. सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में। ;देव–सपना.

2- तुझे अंगार शÕया पर मधुर कलियाँ बिछाना ;जाग तुझको दूर जाना.

अंतरा भाग–2–

1. उससे हारी–होड़ लगाई। ;देवसेना की गीत.
2. जल उठो पिफर सींचने को। ;गीत गाने दो मुझे. 3. प्रिय मौन एक संगीत भरा ;सरोज–स्मृति.
4. पत्थर वुफछ और मुलायम हो गया है ;बनारस.
5. लाख लाख जुग हिअ हिअ राखल तइओ हिअ जरनि न गैल। ;विद्यापति पद. 6. वूफकभरी भूकता बुलाय आप बोलिहै। ;घनानंद कवित्त.

;12द्ध वीप्सा अलंकार–जहाँ आदर, घृणा, हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने वेफ लिए किसी शब्द की आवृत्ति होती है, वहाँ वीप्सा अलंकार होता है। उदाहरण–

हा! हा! इन्हें रोकन कौं टोक न लगावौ तुम। विसद–विवेक ज्ञान गौरव–दुलार हौ।।

इस उदाहरण में 'हा!' शब्द की आवृत्ति द्वारा गोपियों वेफ विरह की तीव्रता दर्शाई गई है। अतः यहाँ वीप्सा अलंकार है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

1. जाँति–पाँति हमतैं बड़ नाहीं, नाहिंन बसत तुम्हारी छैयाँ। ;सूरदास. 2. मेरी करुणा हा–हा खाली ;देवसेना का गीत.

3. कातर दिति करि चौदसि हेरि–हेरि ;विद्यापति–पद.

4. सुलगि सुलगि दगधै भै छारा। ;बारहमासा.
5. हहलि हहलि अधिका हिय काँपे।। ;बारहमासा.

;13द्ध वक्रोक्ति अलंकार–जहाँ किसी उक्ति में, वक्ता वेफ अभिप्रेम आशय से भिन्न अर्थ की कल्पना की जाय वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। ;1. कभी किसी शब्द वेफ श्लेष से कई अर्थ होने वेफ कारण दूसरा अर्थ निकाला जाता है और ;2. कभी कहे हुए वाक्य का कष्ट की ध्वनि या अन्य किसी प्रकार से दूसरा अर्थ निकाला जाता है। पहले प्रकार की उक्ति में श्लेष वक्रोक्ति होती है और दूसरे प्रकार की उक्ति में वाकुवक्रोक्ति।

श्लेष वक्रोक्ति का उदाहरण–

;श्रीकृष्ण राधा वेफ यहाँ गये। उनसे उन्होंने द्वार खोलने को कहा. राधा–को तुम हो, इत आये कहाँ?

श्रीकृष्ण–घनश्याम

;राधा ने श्लेष से घनश्याम का अर्थ 'बादल' लगाकर कहा. हो तो कितहूँ बरसो। अर्थात् बादल का यहाँ क्या काम? यदि बादल हो तो जाकर कहीं जल बरसाओ। कावुफ–वक्रोक्ति का उदाहरण–;रावण ने अंगद से अपनी भुजाओं की शक्ति की डींग मारी। इस पर अंगद बोला.

सो भुज बल राख्यो उर घाली। जीतेउ सहस्रबाहु, बलि, बाली।

यहाँ जीतेउ ;कावुफ से. हारेउ अर्थात् हारे थे सहस्रबाहु, बलि और बाली से। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

1. रुठहि करै तासौं को खेलैं ;सूरदास.
2. क्या कहूँ आज जो नहीं कहीं ;सरोज स्मृति.

;14द्ध परिकर अलंकार–जब प्रस्तुत ;वर्ण्य विषय, विशेष. का वर्णन करने वेफ लिए उसवेफ साथ ऐसे विशेषण का प्रयोग किया जाता है जो साभिप्राय अर्थात् विशेष अभिप्राय या आशय से मुक्त होता है तब 'परिकर' अलंकार होता है। उदाहरण–

चक्रपाणि हरि को निरखि असुर जात भजि दूर

यहाँ 'हरि' का विशेषण 'चक्रपाणि' साभिप्राय है, क्योंकि उनवेफ हाथ में चक्र होने वेफ कारण असुर उनवेफ सामने नहीं ठहर सकते। अन्य उदाहरण ;पाठ्यपुस्तक से.–

1. तऊ गुन सुंदरि अति भेल दूबरि ;विद्यापति–पद.

;15द्ध संदेह अलंकार–जहाँ प्रस्तुत में अप्रस्तुत का संशयपूर्ण वर्णन हो वहाँ संदेह अलंकार होता है। जहाँ उपमेय और उपमान में रूप, रंग आदि वेफ साम्य वेफ कारण समानता हो, इस साम्य वेफ कारण संशयपूर्ण वर्णन हो, वहाँ संदेह अलंकार होता है। उदाहरण–

सारी बिच नारी है कि नारी बिच सारी है। कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।।

इस अलंकार में नारी और साड़ी वेफ विषय में संशय है अतः संदेह अलंकार है। अन्य उदाहरण– प्रेम प्रपंचु कि झूठ पफुर जानहिं मुनि रघुराउ।। ;भरत–राम का प्रेम.

;16द्ध उदाहरण अलंकार–जिन दो वाक्यों का साधारण धर्म भिन्न है, उनमें वाचक शब्द वेफ द्वारा समता दिखायी जाय तो उदाहरण अलंकार होता है। दृष्टांत अलंकार में वाचक शब्द नहीं रहता, किंतु उदाहरण अलंकार में रहता है। जैसे–

उदित वुफमुदिनी नाथ हुए प्राची में ऐसे, सुधा–कलश रत्नाकर से उठता हो जैसे।

यहाँ वुफमुदिनी–नाथ और सुधा–कलश दोनों का धर्म एक नहीं है परंतु 'ऐसे' और 'जैसे'–इन वाचक शब्दों वेफ द्वारा सादृश्य प्रकट किया गया है। इस कारण यहाँ उदाहरण अलंकार है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तक से.–

1. जैसे गुहारते हुए युधिष्ठिर वेफ सामने से ;सत्य अंतरा भाग–2.भागे थे विदुर और भी घने जंगलों में

;17द्ध दृष्टांत अलंकार–जब उपमेय और उपमान वाक्य तथा उनवेफ साधारण धर्म का ;धर्म–पार्थक्य होते हुए भी. जहाँ पर बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव ;भाव साम्य. हो वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है। जैसे–

रहिमन अँसुवा नयन ढरि जिय दुख प्रकट करेइ। जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।

इस उक्ति में प्रथम वाक्य में एक बात कही गई है और दूसरे वाक्य में दूसरी बात। दोनों वेफ धर्म भिन्न हैं। इनमें समता सूचित करने वेफ लिए 'वाचक' शब्द अर्थात् 'सम' 'समान' आदि का प्रयोग भी नहीं हुआ है, किंतु दोनों वाक्यों में बिम्ब प्रतिबिम्ब स्थिति है। दूसरा वाक्य पहले को संपुष्ट करने वाले उदाहरण की भाँति है। अतः यहाँ दृष्टांत अलंकार है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तक से.–

मातु मंदिर मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि वुफचाली।।
पफरह कि कोदव बालि सुसाली। मुक्ता प्रसव कि संबुल काली।। ;भरत–राम का प्रेम.

;18द्ध मानवीकरण अलंकार–अचेतन तत्वों पर मानवीय भावों और संबंधों का आरोप कर उन्हें मानव वेफ समान आचरण करते हुए दिखाना मानवीकरण अलंकार कहलाता है। उदाहरण–

'लो, यह लतिका भी भर लाई नव मुकुल नवल रस गगरी'

यहाँ लता को गागरी भरते लिया गया है। उसे नायिका रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है। अन्य उदाहरण ;पाठ्य पुस्तकों से.–

अंतरा ;भाग–1. से–

1. सिमटा पंख साँझ की लाली ;संध्या वेफ बाद. जा बैठी अब तरु श्खिरों पर 2. अचल हिमिगिरि वेफ हृदय में आज चाहे कंप हो ले, या प्रलय वेफ आँसुओं में मौन अलखित व्योम रो ले। ;जाग तुझको दूर जाना. 3. तुंग हिमालय वेफ कंधों पर छोटी बड़ी कई झीलें हैं ;बादल को घिरते देखा है.

अंतरा ;भाग–2. से–

1. छल छल थे संध्या वेफ श्रमकण ;देवसेना का गीत. 2. प्रलय चल रहा अपने पथ पर
3. नाच रही तरुशिखा मनोहर ;कार्नेलिया का गीत.
4. हेम वुफंभ ले ऊषा सवेरे–भरती बुलकाती सुख मेरे। ;कार्नेलिया का गीत. मदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा।।
5. श्रमित स्वप्न की मधुमाया में ;देवसेना का गीत. 6. मेरी करुणा हा! हा! खाती ;देवसेना का गीत. 7. देखा मैंने, वह मूर्ति–धीति ;सरोज–स्मृति.
8. अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर ;बनारस. अपनी दूसरी टाँग से बिल्वुफल बेखबर
9. करिन्ह बनापफति कीन्ह हुलासू। ;बारहमासा. 10. चहुँ ओरनि नाचती मुक्तिनटी ;लक्ष्मण–उर्मिला.

6

बिम्ब

म्ब अँग्रेजी वेफ 'इमेज' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसका अर्थ है–मूर्त रूप प्रदान करना। काव्य में बिम्ब वह शब्द–चित्रा माना जाता है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिक अनुभवों वेफ आधार पर निर्मित होता बि

है। काव्य–भाषा वेफ लिए बिम्ब अपरिहार्य है। ये भावानुभूतियों को चाक्षुष रूप प्रदान करते हैं तथा काव्य में आकर्षण उत्पन्न करते हैं। बिम्ब द्वारा सृजित चित्रा वेफवल शब्द–चित्रा ही न हो अपितु इन शब्द–चित्रों में भावों और अनुभूतियों को उद्वेलित करने की शक्ति भी होनी चाहिए, तभी बिम्ब को सार्थक कहा जा सकता है। बिम्ब वेफ तीन मूलभूत तत्व हैं–1. कल्पना 2. भाव 3. ऐन्द्रिकता। इन तत्त्वों से युक्त बिम्ब–विधान में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है– 1. भावनाओं को उद्वेलित करने की सामर्थ्य 2. नवीनता एवं ताजगी 3. प्रसंगानुवूफल सार्थकता 4. सजीवता तथा स्पष्टता

जिससे कि प्रमाता तुरन्त बिम्ब वेफ माथ ऐन्द्रिक तादाकार कर सवेंफ। उपर्युक्त विवेचन को दृष्टिगत रखते हुए सारांशतः यह कहा जा सकता है कि ''जब कवि अपनी काव्यानुभूति को अधिक संप्रेषणीय बनाने वेफ लिए प्रकृति वेफ स्थूल और सूक्ष्म उपादानों वेफ माध्यम से पाठक अथवा श्रोता की अनुभूति को अधिक संवेदनशील बनाने का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपक्रम करता है, वह उपक्रम ही काव्य में बिम्ब कहलाता है।''

इस उक्ति वेफ संदर्भ में हम अपने शिक्षकीय दृष्टिकोण वेफ साथ पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं में बिम्ब की स्थितियों को उनवेफ संदर्भों वेफ साथ प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे ताकि शिक्षण में सहजता, सुगमता तथा स्पष्टता आ सवेंफ विद्वानों ने विभिन्न आधारों पर बिम्ब वेफ अनेक भेद किए हैं। यथा–

1. ऐन्द्रिक ;1. चाक्षुष ;2. श्रव्य ;3. स्पृश्य ;4. घ्रातव्य ;5. आस्वाद्य
2. काल्पनिक–;1. स्मृति ;2. कल्पित
3. प्रेरक अनुभूति वेफ आधार पर–;1. सरल ;2. मिश्रित ;3.तात्कालिक ;4. संवुफल ;5.

भावातीत

अति विस्तार से बचते हुए हम यहाँ बिम्ब की काव्यशास्त्रीय विवेचना नहीं कर रहे, वेफवल पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं वेफ मध्यम वुफछ प्रमुख बिम्बों को उद्धृत कर रहे हैं जिसमें बिम्ब वेफ वुफछ सामान्य प्रकारों की चर्चा की जाएगी जिनमें चाक्षुष ;दृश्य., श्रोत ;श्रव्य., स्पृश्य, घ्रातव्य ;घ्राण., रस्य ;आस्वाद्य. प्रमुख हैं। उल्लिखित बिम्बों में किसी न किसी इन्द्रिय अनुभव की प्रधानता होती है। चाक्षुष अथवा दृश्य बिम्ब में चित्रात्मकता प्रधान होती है और श्रव्य बिम्बों में ध्वनि अथवा नाद की प्रधानता होती है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध कर्णेन्द्रियों से होता है। स्पृश्य बिम्ब में कोमल, कठोर कर्कश अथवा स्निग्ध, शीतोष्ण आदि संवेदनाओं की अनुभूति होती है। घ्रातव्य अथवा घ्राण बिम्बों को सम्बन्ध सीधा सूँघने की अनुभूति से है। रस्य अथवा आस्वाद्य बिम्बों का प्रयोग स्वाद–इन्द्रिय ;जिह्वा/रसना. से है।

अन्तरा भाग–दो में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताओं में दृष्टव्य बिम्ब–विधान

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद एक छायावादी कवि हैं और छायावाद की प्रमुख विशेषता स्थूल और सूक्ष्म वेफ मध्य अन्तर्द्वन्द्वों को प्रकृति वेफ उपादानों वेफ माध्यम से प्रतिबिम्बित करना है। इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में संकलित उनकी दोनों कविताओं में दृष्टव्य बिम्बात्मक वर्णन को उदाहरणतः समझा जा सकता है।

देवसेना का गीत

श्रमित स्वप्न की मधुमाया में गहन विपिन की तरु–छाया में पथिक उनींदी श्रुति में किसने
यह विहाग की तान उठाई।

उपर्युक्त काव्यांश में प्रसाद जी द्वारा देवसेना की संवेदनाओं का साधारणीकरण करते हुए श्रमित पथिक की तन्द्रा व स्था में स्वप्न देखे जाने तथा विहाग राग सुनकर चौंककर उठ जाने वेफ वर्णन में दृश्य बिम्ब है।

कार्नेलिया का गीत

'सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा'

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रसाद जी ने प्राकृतिक उपादानों वेफ माध्यम से प्रातःकालीन वातावरण की मनोहारी छटा प्रस्तुत की है। ये पंक्तियां श्रोता या पाठक वेफ मन में उषाकालीन दृश्य बिम्ब का निर्माण करने में सक्षम है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

"सरोज–स्मृति"–निराला जी की प्रस्तुत कविता भारतीय साहितय की अमूल्य निधि है जिसमें एक विधुर पिता अपनी पुत्री वेफ विवाह वेफ अवसर पर अपने मन की समस्त वियोगात्मक अनुभूतियों को अपने मन में सहेजकर पिता कर्त्तव्य को पूरा करते हुए पुत्री वेफ शृंगार आदि का मार्मिक वर्णन करते हैं और अनेक बिम्बों वेफ माध्यम से वैवाहिक वातावरण को चाक्षुष रूप से प्रस्तुत करते हैं। यथा–

"नत नयनों से आलोक उतर काँपा अधरों पर थर–थर–थर। देखा मैंने, वह मूर्ति धीति
मेरे वसंत की प्रथम गीति।"

उपर्युक्त पंक्तियों में निरालाजी ने सरोज को वधु रूप में चित्रित करते हुए दृश्य–बिम्ब का विधान किया है। "काँपते हुए उधर", "बनती हुई मूर्ति", नैनों से उतरता हुआ आलोक" पाठक और श्रोता वेफ मन में एक प्रत्यक्ष बिम्ब का निर्माण करते है।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

"मैंने देखा एक बूँद मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर वेफ झाग से रंग गई क्षण–भर ढलते सूरज की आग से।

उपर्युक्त काव्य–पंक्तियों में अज्ञेय ने एक बूँद वेफ सहसा सागर की लहरों से उछलकर अलग होने तथा उस पर ढलते हुए सूरज का प्रकाश पड़ने से लालिमायुक्त होने वेफ वर्णन में निर्मित बिम्ब का सपफल विधान किया है।

केदारनाथ सिंह

बनारस

सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में एक अजीब–सी नमी है
और एक अजीब–सी चमक से भर उठा है भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन

उपर्युक्त काव्यांश में वेफदारनाथ सिंह ने सुप्रसि(धार्मिक व आस्था वेंफद्र बनारस वेफ सांस्कृतिक वैभव का सचित्रा वर्णन करते हुए बनारस वेफ घाट पर बैठे बंदरों की नम आँखों तथा भिखारियों वेफ कटोरों में गिरते सिक्कों वेफ सरल व सहज शब्दों में किए गए वर्णन द्वारा सम्पूर्ण वातावरण की बिम्बात्मक प्रस्तुति की है।

जायसी

बारहमासा

बिरह सैचान भवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा। रक्त ढ़रा माँसू गरा हाड़ भए सब सख। धनि सारस होई ररि मुई आइ समेटहु पंख। उपर्युक्त काव्यांश में सूपफी कवि जायसी

ने नागमती वेफ वियोग–वर्णन में विरह–भावना को एक बाज वेफ

रूप में दर्शाते हुए नागमती का वर्णन एक निरीह पक्षी वेफ रूप में किया है जिसका भक्षण विरह रूपी बाज ने किया है और अब वेफवल उसवेफ पंख ही शेष है। प्रस्तुत वर्णन में जायसी ने साँग रूपक अलंकार की सपफल योजना करते हुए अत्यंत स्पष्ट बिम्ब का विधान किया है।

केशव

लक्ष्मण उर्मिला अघओघ की बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु–ज्ञान–गटी। चहुँ ओरनि नाचति मुक्ति नटी गुन धूरजटी जटी पंचवटी।। अन्तरा भाग–1

प्रमुख कवियों की रचनाओं में द्रष्टवय बिम्ब–विवेचन संक्षिप्त रूप में अग्रांकित है–

सूरदास पद–2

मुरली तरु गुपालहिं भावति।

सुनि री सखी जदपि नंदलालहि, नाना भाँति नचावति। भृवुफटि वुफटिल, नैन नासा–पुट, हम पर कोप–करावति। सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन, धर तै सीस डुलावति। उपर्युक्त काव्यांश में सूरदास ने कृष्ण द्वारा मुरली–वादन वेफ समय उनकी भाव–भंगिमा, शारीरिक मुद्रा–यथा मुरली–वादन करते समय एक पैर पर खड़े होने, कमर टेढ़ी होने, गर्दन झुकाने, मुरली वेफ होंठों से लगाने, भौंहे टेढ़ी होने तथा नाक वेफ नथुने टेढ़े होने आदि का अत्यंत सजीव वर्णन करते हुए अत्यंत श्लाघनीय बिम्ब–रचना की है।

देव

सपना

झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि–घहरि घटा घेरी है गगन में।

आँख खोलि देखौं तौ न घन हैं, न घनश्याम, वेई छाई बूँदें मेरे आँसु है दृगन में। उपर्युक्त काव्यांश में वर्षा)तु वेफ मनमोहक वातावरण में जब झर–झर करवेफ हल्की बूँदाबाँदी हो रही है, आकाश में घने मेघ छाए हैं, गोपी स्वप्न देखती है कि कृष्ण उससे झूला झूलने का प्रस्ताव रखते हैं और वह सहर्ष तैयार हो जाती है परन्तु जैसे ही वह उठकर खड़ा होना चाहती है, उसका स्वप्न टूट जाता है–प्रस्तुत वर्णन में देव ने अपनी सूक्ष्म किया है जिसका आस्वादन करते समय पाठक स्वयं को कवि की कल्पना से तदाकार अनुभव करता है।

पदमाकर

पद

भौंरन को गुंजन बिहार वन कुंजन में, मंजुल मलारन को गावनो लगत है। नेह सरसावन में मेह बरसावन में, सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है। उपर्युक्त काव्यांश में रीतिकालीन कवि पदमाकर ने सावन की मनोहारी छटा प्रस्तुत की है। सावन वेफ सुहावने मनमोहक वातावरण में जब वनो–वुफंजों में गुनगुनाते हुए भ्रमर विहार कर रहे हैं, शोर करते हुए मयूर नृत्य कर रहे हैं, वर्षा की हल्की–हल्की बूँदें गिर रही हो–प्रिय का साथ भला किसे सुहावना नहीं लगता। उपर्युक्त सजीव शब्द–चित्रा वेफ माध्यम से कवि ने अपनी बिम्ब–विधायनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

सुमित्रानन्दन पन्त

संध्या के बाद सुमित्राानन्दन पन्त द्वारा रचित कविता 'संध्या वेफ बाद' बिम्ब रचना का एक सटीक उदाहरण है। इस कविता ने स्थान–स्थान पर पन्त जी की सि(हस्त लेखनी ने अनेक सुन्दर बिम्बों की सृष्टि की है। उदाहरणतः

सिमटा पंख साँझ की लाली जा बैठी अब तरु–शिखरों पर नील लहरियों में लोड़ित

पीला जल रजत जलद से बिंबित। प्रस्तुत काव्यांश में शब्द–शिल्पी पंत ने अपनी अनुपमेय शब्द–योजना वेफ माध्यम से साँझ वेफ सुनहरे वातावरण का मनोहारी दृश्य–बिम्ब रचा है। 'संध्या रूपी पक्षी का अपने पंख समेट कर तरु–शिखरों पर जा बैठना', 'ताम्रवर्णी पीपल वेफ पत्ते', 'सैकडों धाराओं में बहते स्वर्णिम निर्झर', 'किसी थवेफ हुए अजगर की भाँति बहता चितकवश गंगाजल', 'धूप–छाँह वेफ रंग वाली रेती' तथा 'गंगा वेफ पीले जल में दिखाई पड़ता सपफेद बादलों का प्रतिबिम्ब–यह सम्पूर्ण वर्णन पाठक वेफ अन्त–चक्षुओं वेफ समक्ष संध्या वेफ सुहावने वातावरण वेफ समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों की एक अद्‌भुत बिम्बात्मक प्रस्तुति करने में सक्षम है।

महादेवी वर्मा

सब आँखों के आँसू उजले नीलम मरकत के संपुट दो जिनमें बनता जीवन–मोती, इसमें ढलते सब रंग–रूप उसकी आभा स्पंदन होती।

जो नभ में विद्युत–मेघ बना,

वह रज में अंकुर होकर निकला। उपर्युक्त काव्यांश में महादेवी ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए नीले आकाश और हरित धरा वेफ दो संपुटों ;पफलियों. वेफ मध्य जीवन–रूपी मोती वेफ पलने की प्रक्रिया वेफ वर्णन में एक अत्यंत सुन्दर दृश्यबिम्ब का विधान किया है और एक मनोहारी प्राकृतिक छटा से भरपूर दृश्य को शब्दों की तूलिका से कागज वेफ वेफनवास पर उतारा है।

नागार्जुन

बादल को घिरते देखा है

नागार्जुन द्वारा रचित कविता 'बादल को घिरते देखा है' में लगभग प्रत्येक पद्यांश में आंशिक अथवा पूर्ण रूप से बिम्बात्मकता वेफ दर्शन होते हैं। उदाहरणतः निम्नलिखित पद्यांश प्रस्तुत है–

अमल–धवल गिरि के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है।

....

कमलों पर गिरते देखा है, बादल को घिरते देखा है। उपर्युक्त काव्यांश में नागार्जुन अपने सि(हस्त प्रकृति वर्णन द्वारा अपने साथ पाठक को हिमालय की बपर्फीली वादियों की सैर करा रहे है–जहाँ कवि स्वच्छ एवं सपफेद बपर्फ की चोटियों से सुसज्जित हिमालय पर्वत पर बादलों को घि ारते देखता है। बादलों से मोती वेफ समान शीतल बपर्फ–कणों वेफ रूप में मानसरोवर तालाब में कमलों पर गिरते देख रहा है। यहाँ कवि ने पर्वत वेफ शिखरों पर उमड़ने–घुमड़ने वाले मेघों की प्राकृतिक सुषमा को व्यक्त करते हुए एक श्लाघनीय बिम्ब की रचना की है।

धूमिल

घर की वापसी मेरे घर में पाँच जोड़ी आँखें हैं माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही तीर्थ–यात्राा की बस वेफ
दो पंचर पहिए है।
बेटी की आँखें मंदिर में दीवट पर जलते घी वेफ
दो दिए हैं।

साठोत्तरी कविता वेफ सशक्त हस्ताक्षर सुदामा पांडेय 'धूमिल' ने अपनी इस कविता में गरीबी से घिरे एक ऐसे घर का बिम्बात्मक चित्राण किया है जिसवेफ पाँच सदस्य हालाँकि एक ही छत वेफ नीचे निवास करते है परन्तु उनवेफ बीच गरीबी एक दीवार बनकर खड़ी है जिसवेफ कारण स्नेह की ऊष्मा एक–दूसरे को स्पर्श नहीं कर पाती। यह कविता आधुनिक पारिवारिक जीवन वेफ कड़वे सच को उजागर करती है। उपर्युक्त पद्यांश में कवि माँ की आँखों की तुलना तीर्थ–यात्राा की बस वेफ दो पंचर पहियों और पिता की आँखों की तुलना लौह–साय की ठंडी सलाखों से करते हुए प्रकारान्तर ये उनकी ध्वस्त आकांक्षाओं और वातावरण से संघर्ष करने की क्षमता का चुक जाने का वर्णन करता है। पुत्राी की आँखें मन्दिर वेफ दीवट पर जलने वाले घी वेफ दीपक वेफ समान बताई गयी है जो निश्छलता, भोलापन एवं पवित्राता वेफ भाव की सूचक है।

देव

क्षितिज भाग–2

पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज' में संकलित देव की तीनों ही कविताओं 'सवैया', कवित्त–1 एवं कवित्त–2 में

बिम्बात्मक वर्णन है। उदाहरणतः निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत है–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के सुमन झिंगूला सोहै तन छवि भारी दे।

मदन महीप जू को बाल बसंत ताहि, प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै। रीतिकाल वेफ प्रसि(कवि देव ने प्रस्तुत काव्यांश में वसंत)तु को छोटे बालक वेफ रूप में चित्रित किया है। शिशु रूप में वसंत वेफ आगमन वेफ समय पेड़ों की डाल की कल्पना उसवेफ बिछौने वेफ रूप में की गई है, खिले हुए पफूल उसवेफ वस्त्रा है, मोर और तोता इससे बतिया रहे हैं, कोयल ताली बजा–बजाकर इसे हिला रही है। बसंतराजा कामदेव वेफ इस बालक को प्रातःकाल गुलाब चुटकी बजा–बजाकर जगा रहा है। यहाँ कवि ने बसंत को बालक रूप में दिखाकर प्रकृति वेफ साथ रागात्मक संबंध दर्शाया है तथा अनुप्रास, मानवीकरण तथा रूपक अलंकारों की सहायता से अपनी ललित कल्पना वेफ बल पर बसंत)तु का सादृश्य एक नवजात शिशु से स्थापित करते हुए एक सुन्दर बिम्ब निर्मित किया है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

'अट नहीं रही है'

कहीं साँस लेते हो,
घर–घर भर देते हो,

पत्तों से लदी डाल कहीं हरी, कहीं लाल पाट–पाट शोभा–श्री पट नहीं रही है। उपर्युक्त काव्यांश में पफागुन की आभा का मानवीकरण करते हुए निराला सुंदर शब्दों वेफ चयन एवं लय द्वारा पफागुन की सर्वव्यापक शोभा का चाक्षुष बिम्ब प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें कहीं हरी तो कहीं लाल आभा भरी हुई है, समाज प्रकृति पफल–पफूलों से लद गई है और इसका प्रभाव लोगों वेफ तन–मन पर भी देखा जा सकता है। पफागुन की शोभा जगह–जगह छा गई है, वह समाए नहीं समाती।

नागार्जुन

यह दंतुरित मुस्कान तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान मृतक में भी डाल देगी जान छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेपफलिका के पफूल बाँस था कि बबूल वात्सल्य से परिपूर्ण इस कविता में छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान देखकर कवि वेफ मन में जो भाव उमड़ते हैं, उन्हें कविता में अनेक बिम्बों वेफ माध्यम से प्रकट किया गया है। बच्चे की ;छोटे–छोटे. नए–नए दाँतों वाली मंद–मंद मुस्कान बहुत भोली, सरल व निश्छल है। यह मनभावना है और मृतक में भी प्राणों का संचार करने में सक्षम है। छोटे बच्चे की खिलखिलाहट से उसवेफ दुधमुँहे दाँत की चमक, उसका खिलखिलाना इतना भावमय व जीवंत है कि मृतक व्यक्ति में भी प्राण आ जाते है। कोई व्यक्ति कितना भा पत्थरदिल हो, परंतु बच्चे की सम्मोहिनी छवि को देखकर पिघल गया होगा मानो शेपफालिका वेफ पफूल झर रहे हो। प्रस्तुत काव्यांग में नागार्जुन ने प्रश्नात्मक तथा चित्रात्मक शैली वेफ प्रयोग से मौन भाषा को मुखरित करते बालक को मुस्कान की निश्छलता का अत्यंत भावमय बिम्ब उवेफरा है जिससे पाठक अनायास ही तादातम्य स्थापित कर लेता है।

मंगलेश डबराल

संगतकार

मुख्य गायक के चट्टान जैसी भारी स्वर का साथ देती वह आवाज सुंदर कमजोर काँपती हुई थी जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन जब वह नौसिखिया था 'संगतकार' कविता में मंगलेश डबराल ने मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका वेफ महल वेफ बहाने पृष्ठभूमि में रहकर योगदान देने वाले लोगों वेफ महत्त्व पर विचार किया है। प्रस्तुत कविता पाठक में वह समझ और संवेदनशीलता विकसित करती है कि वह अनुभव कर पाए कि दृश्य माध्यम की प्रस्तुतियों जैसे–नाटक, पिफल्म, संगीत और नृत्य में ही नहीं वरन् समाज और इतिहास में भी अनेक ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जहाँ नायक की सपफलता में अनेक लोगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उनका सामने न आना उनकी कमजोरी नहीं, मानवीयता है। संगीत की सूक्ष्म समझ और कविता की दृश्यात्मकता इस कविता को ऐसी गति देती है मानो हम सम्पूर्ण दृश्य को अपने सामने घटित होते देख रहे हो और एक सशक्त बिम्ब की निर्मित होती है।

क्षितिज भाग–1

पाठ्य पुस्तक में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताओं में दृष्टवय बिम्ब–वर्णन अग्रांकित हैं–

सुमित्रानंदन पन्त

'ग्रामश्री'

पफैली खेतों में दूर तलक मखमल की कोमल हरियाली लो, हरित धरा से झाँक रही नीलम की कलि, तीसी नाली। अब रजत स्वर्ण मंजरियों से लद गई आम्र तक की डाली,

पफूले आड़ू, नींबू, दाडिम, आलू, गोभी, बैंगन, मूली। सुवुफमार कल्पना वेफ धनी, शब्द–शिल्पी सुमित्राानन्दन पन्त वेफ रचना–कर्म में प्रकृति–चित्राण का विशिष्ट महत्त्व है। प्रस्तुत कविता 'ग्रामश्री' इसका ज्वलंत प्रमाण है जिसमें पन्त जी ने प्राकृतिक सुषमा और समृ(का मनोरम वर्णन करते हुए अनेक मोहक चाक्षुष बिम्बों का विधान किया है। उनकी कल्पना कहीं उन्हें खेतों में दूर पफैली लहलहाती पफसलों वेफ बीच ले जाती है तो कहीं वह चाँदी की जाली वेफ समान बिखरी हुई सूर्य की किरणों वेफ सौंदर्य को निरखतें दिखाई देते हैं। हरी–भरी धरती पर नीले आकाश का पर्दा–सा पफैला हुआ है। हरी–भरी धरती पर नीले आकाश का पर्दा–सा पफैला हुआ है। सारा गाँव पन्ने वेफ खुले डिब्बे–सा प्रतीत होता है जिस पर सापफ–स्वच्छ आकाश रूपी नीलम पफैला हुआ है। भाषा का प्रयोग करने में अति निपुण पन्त ने अपनी इस कविता में उपमा, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश और रूपक अलंकारों वेफ सहज–स्वाभाविक प्रयोग द्वारा गतिशील बिम्ब योजना प्रस्तुत की है। दृश्यबिम्ब ने सम्पूर्ण प्राकृतिक वर्णन को चित्राात्मकता का गुण प्रदान किया है।

केदारनाथ अग्रवाल

चंद्र गहना से लौटती बेर देख आया चंद्र गहना देखता हूँ दृश्य अब मैं।

मेड़ पर इस खेत की बैठा अवेफला।

पर पफैलाए सारस वेफ संग जहाँ जुगल जोड़ी रहती है हरे खेत में,

सच्ची प्रेम–कहानी सुन लूँ चुप्पे–चुप्पे। वेफदारनाथ अग्रवाल की ‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता में भी प्राकृतिक सुषमा का अन्यतम वर्णन है–जिसमें कवि का प्रकृति वेफ गहरा अनुराग भाव पाठक को एक विशिष्ट जुड़ाव का बोध कराने में सक्षम है। चंद्र गहना से लौटते समय कवि का मन बार–बार प्रकृति वेफ विविध रंगों को निरखता हुआ पुलकित हो रहा है। वह इस अलौकिक प्राकृतिक सौन्दर्य को शहरी विकास की तेज गति से बचाकर अपनी भावनाओं और संवेदनाओं वेफ बीच सुरक्षित रखना चाहता है। खेत की मेड़ पर बैठे हुए ऐसा लगता है जैसे पौधों ने पफूलों की पगड़ियां बाँधी हुई हो, वे सज–सँवरकर खड़े हो। बगुला मछलियों की ताक में शांत भाव से एक टाँग पर खड़ा है। कवि सारस पक्षियों वेफ जोड़े वेफ साथ हरे–भरे खेतों में उनकी प्रेम–कथा को सुनना चाहता है। प्रस्तुत कवि में वेफदारनाथ अग्रवाल ने शब्दों वेफ सौंदर्य, ध्वनियों की धारा और संगीतात्मकता वेफ द्वारा लोकभाषा और ग्रामीण जीवन से जुड़े बिम्बों की सपफल योजना की है जो इस कविता का प्राण तत्त्व है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

मेघ आए मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के आगे–आगे नाचती–गाती बयार चली, दरवाजें–खिड़कियाँ खुलने लगीं गली–गली, पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के। क्षितिज–अटारी गहराई दामिनी दमकी,

क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की, बाँध टूटा झर–झर मिलन के अश्रु ढर के, मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने प्रस्तुत कविता ‘मेघ आए’ में मेघों की तुलना गाँव में सज–सँवर वेफ आने वाले दामाद वेफ साथ की है। सर्वेश्वर ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए उमंग, उत्साह तथा उपालंभ आदि

भावों को बड़े सजीव ढंग से चित्रामयता वेफ साथ कविता में चित्रित किया है। जिस प्रकार दामाद वेफ आने पर गाँव में प्रसन्नता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है उसी प्रकार मेघों वेफ आनेपर धरती पर भी प्राकृति उपादान उमंग में झूम उठते हैं। बने–ठने मेघों को देखकर गली–मुहल्ले की खिड़कियाँ एक–एक कर खुलने लगी। पेड़ झुक–झुककर गरदन उचकाकर उसे देखने लगे तो धूल घाघरा उठाकर आँधी वेफ साथ भाग चली। प्रस्तुत कविता में कवि ने सीधी–सादी भाषा में नये अप्रस्तुतों और बिम्बों की रचना द्वारा अपने वर्णन को चित्रामयता प्रदान की है। मेघों का आना, प्रकृति वेफ उपादानों आदि वर्णन द्वारा उनका स्वागत करना, धरती से उनका मिलन–कवि की अनूठा बिम्ब–योजना का अन्यतम् उदाहरण है।

राजेश जोशी

> बच्चे काम पर जा रहे हैं कोहरे से ढंकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं। सुबह–सुबह बच्चे काम पर जा रहे हैं कितना भयानक होता अगर ऐसा होता भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह कि हैं सारी चीजें हस्व–मामूल पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं।

उपर्युक्त कविता में राजेश जोशी ने आधुनिक युग वेफ कड़वे यथार्थ पर अपनी उंगली रखी है जिसे आज का सुविधापरस्त व्यक्ति देखकर भी अनदेखा कर देना चाहता है। इस भौतिकतावादी युग ने मानव को इतना स्वार्थी बना दिया है कि उसे अपने काम वेफ लिए छोटे–छोटे बच्चों से उनवेफ बचपन को छीन लेने में भी कोई गुरेज नहीं है। सर्दियों की कोहरे से भरी सड़क पर 'बच्चे सुबह–सवेरे काम पर जा रहे है' जो अपने समय की सबसे भयानक बात है। उक्त कविता में राजेश जोशी ने सहजता, गति, सरलता, सरसता और स्थानीय बोली का पुट देते हुए सीधी–सादी भाषा में एक अत्यंत प्रभावी बिम्ब की योजना की है जो पाठक की संवेदना को झकझोर देने में सक्षम है।

अभ्यास–कार्य

कक्षा नवम्

निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

1. ऊँचे वुफल का जनमिया, जे करनी ऊँच ना होइ, सुवरन कलश सुरा भरा, साधु–निन्दा सोई।
2. तृषा हानि परि घर ऊपरि, वुफबधि का भांडा–पफूटा जोग–जुगति करि मंतो बाँधि, निरचू चुवै ना वाणी।
3. आई सीधी राह से, गई न सीधी राह सुषुम–सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आज
4. काननि दे अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै। मोहनो तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गहै तो गहै।
5. किस दावानल की ज्वालाएँ है दीखी कोकिल बोलो तो।
6. हँसमुख हरियाली हिम आतप सुख–से अलासाए–से सोए।
7. क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी

क्षमा करो खुल गई गाँठ भ्रम की।

8. 'मेघ आए' नामक कविता नवगीत की नई काव्य–परम्परा का सटीक उदाहरण।
9. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' आधुनिक कविता की यथार्थ अभिव्यक्ति की सटीक अवतारणा है, स्पष्ट करो।
10. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता वेफ बिम्ब–योजना स्पष्ट कीजिए।

कक्षा दशम

काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

1. हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन–क्रम–वचन नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि परकी। 2. सूर समर करनी करहीं कहि न जनावहि आप विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु। 3. तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी
झिलमिली होति मोतिन की ज्योति मिल्यो मलिका को मकरंद। 4. विद्युत–छवि उर में, कवि नवजीवन वाले बज्र छिपा नूतन कविता पिफर भर दो बादल गरजो।

5. छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेपफालिका वेफ पफूल बांस था कि बबूल
6. 'उत्साह' कविता में निराला जी ने वर्षा का सजीव चित्राण किया है, स्पष्ट कीजिए।
7. 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने अपनी मनोवैज्ञानिक भाव–दशाओं का चित्राण किया है, स्पष्ट करो। 8. 'कन्यादान')तुराज की सामाजिक समस्या को प्रामाणिक से उद्धृत करती है इसवेफ मार्मिक पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

एकादश कक्षा

काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

1. अति आधीन सुजान कनौडे, गिरिधर नार नवावति आपुन पौढ़ि अधर–सज्जा पर कर–पल्लव पलुटावति।
2. झहरि झहरि झीनी बूँदे है, थुरति मानो घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में।
3. हौं तो स्याम–रंग में चुराइ चित चोरा चारी बोरत तो बोरयो पर निचोरत बनै नाहीं।
4. स्वर्ण–चूर्ण सी उड़ती गोरज किरणों की बादल–सी जलकर सनन–तोर–सा जाता नभ में ज्योतित पंखों–कंठों का स्वर
5. रजन–रचित मणि खचित कलामय पान–पात्रा द्राक्षासव पूरित
6. 'सपना' कविता में वर्णित रस योजना स्पष्ट कीजिए।
7. 'संध्या वेफ बाद' कविता में प्रयुक्त प्रतीकों का उल्लेख कीजिए।
8. 'नींद उचट जाती है' कविता में आम व्यक्ति वेफ जीवन वेफ मनोविज्ञान को उभारा गया है, स्पष्ट करो। 9. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में नार्गाजन की बिम्ब–योजना पर प्रकाश डालिए।

द्वादश कक्षा

काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 1. लघु सुरधनु से पंख पसारे शीतल मलय समीर सहारे उड़ते खग जिस और मुंह कए समझ नीड़ निज प्यारा।
2. इस पथ पर मेरे कार्य सकल हो भ्रष्ट शीत–वेफ–से शतदल 3. मुझे दीख गया सुने विराट वेफ सम्मुख
हर आलोक हुआ अपनापन
है उन्मोचन नश्वरता वेफ दाग से।

4. किसी अलवित सूर्य को देता हुआ अर्घ्य शताब्दियों से इसी तरह गंगा वेफ जल में अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर अपनी दूसरी टाँग में बिल्वुफल बेखबर।
5. मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को हम इसको क्या कर डाले,
इस अपने मन की खीज को।

6. 'देवसेना का गीत' नामक कविता में प्रयुक्त प्रतीकों की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 7. 'बनारस' कविता की बिम्ब–योजना स्पष्ट कीजिए।
8. विद्यापति की कविताओं में प्रयुक्त रसों का सोदाहरण कीजिए।
9. घनानंद की कविताओं में प्रयुक्त छन्द–योजना पर प्रकाश डालिए।
10. पाठ्य पुस्तक में संकलित तुलसीदास की कविताओं में प्रयुक्त छन्दों की उदाहरण सहित सारणी बनाइए।

सहायक–ग्रंथ–सूची

1. काव्य प्रकाश मम्मट
2. साहित्य–दर्पण, पंडित विश्वनाथ 3. दिनकर–का काव्यशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. दयाराम वर्मा 4. रस–मीमांसा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
5. वक्रोक्ति जीवितम्, आचार्य वुफंतल 6. भारतीय काव्यशास्त्रा, भगीरथ मिश्र 7. पाश्चात्य काव्यशास्त्रा, भगीरथ मिश्र 8. रस–सि(ान्त, डॉ. नगेन्द्र 9. भारतीयपाश्चात्य काव्य–चिंतन, निर्मला जैन तथा वुफसुम आख्या 10. पाश्चात्य काव्य–दृष्टि अनूदित एड्रना लुकाच 11. हिन्दी आलोचना वेफ बीज–शब्द, बच्चन सिंह 12. छायावाद, नामवर सिंह 13. नयी कविता वेफ प्रतिमान, लक्ष्मीकान्त वर्मा 14. काव्य वेफ तत्त्व, डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा
15. हिन्दी व्याकरण चंद्रोदय, हरिदत्त शास्त्री